गुप्त कलीसिया–9

मसीह की देह

डॉ. डेविड प्लॉट

Part 3

प्रेरितों के काम 2:42–47, "और वे प्ररितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे। और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्‌भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे। और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थीं। वे अपनी–अपनी सम्पत्ति और सामान बेच–बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बांट दिया करते थे। वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर–घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे, और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थेः और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।"

मैं इस एक ही गद्यांश से आपके समक्ष कलीसिया की सात मुख्य गतिविधियां रखना चाहता हूं। मैं परम्पराओं और अधिमान्यताओं को अनदेखा करते हुए, इस पर बाइबल आधारित मनन करना चाहता हूं। कलीसिया के काम हैंः सुसमाचार सुनाना, बपतिस्मा देना, शिक्षा देना, पोषण करना, आराधना करना, प्रार्थना करना और संख्या में वृद्धि करना। हम एक एक करके इसे देखेंगे।

कलीसिया सुसमाचार सुनाती है।

कलीसिया मसीह की महिमा देखती है।

कलीसिया सुसमाचार प्रचार करती है। इसका आरंभ प्रेरितों के काम अध्याय 1 से होता है और वास्तव में प्रेरितों के काम अध्याय 1 ही नहीं परन्तु मत्ती, मरकुस और लूका में प्रभु यीशु की महिमा को निहारती है। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में प्रभु यीशु उनके साथ था परन्तु वे सोच रहे थे कि वह मर चुका है।

वह कब्र से जी उठा और प्रेरितों के काम 1:9–11 में लिखा है,

"यह कहकर वह उन के देखते–देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आंखों से छिपा लिया। उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए, और उनसे कहा, "हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो?

यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।"

अतः आरंभ यह है। वे यीशु को देखते रहे। वह पुनर्जीवित उद्धारकर्ता, महिमान्वित प्रभु और आनेवाला राजा है। यह दर्शन उन्हें प्रेरितों के काम की संपूर्ण पुस्तक में क्रियाशील रखेगा। आज कलीसिया को भी इस बात से क्रियाशील होना है जब तक कि वह फिर इसी रूप में न लौट आए जिस रूप में वह स्वर्ग गया था। परमेश्वर के राज्य के लिए हमारा मनोवेग राजा के लिए हमारे मन ही उमंग से गतिशील होना है। दानिय्येल 7 में मेरा मनभावन पद है क्योंकि वह मनुष्य के पुत्र के आगमन की, और उसके अधिकार, प्रभुता, शासन की भविष्यद्वाणी करता है। तब आप स्तिफनुस, प्रथम मसीही शहीद के बारे में देखते हैं।

दानिय्येल 7:13–14, "मैं ने रात में स्वप्न में देखा, और देखो, मनुष्य के सन्तान–सा कोई आकाश के बादलों समेत आ रहा था, और वह उस अति प्राचीन के पास पहुंचा, और उसको वे उसके समीप लाए। तब उसको ऐसी प्रभुता, महिमा और राज्य दिया गया, कि देश–देश और जाति–जाति के लोग और भिन्न–भिन्न भाषा बालनेवाले सब उसके अधीन हों; उसकी प्रभुता सदा तक अटल, और उसका राज्य अविनाशी ठहरा।"

स्तिफनुस को पथरवाह किया जा रहा था। उसने आकाश की ओर दृष्टि की तो परमेश्वर की महिमा देखी और प्रभु यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर देखा। प्रेरितों के काम 7:55–60, "परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, "देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूं।" तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर झपटे; और उसे नगर के बाहर निकालकर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पांवों के पास उतार कर रख दिए। वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" फिर घुटने टेककर ऊंचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर सो गया।"

स्तिफनुस ने अपनी जान दी क्योंकि वह राजा की महिमा से जकड़ा हुआ था। यही कारण है कि हम सुसमाचार प्रचार करते हैं।

कलीसिया मसीह यीशु का सुसमाचार सुनाती है। यह एक प्रचलित वचन न हो परन्तु हम इसी कारण सुसमाचार सुनाते हैं। कलीसिया सुसमाचार सुनाती है। हर एक स्थान में ऐसे मनुष्य हैं जो नहीं जानते कि प्रभु यीशु उद्धारकर्ता और राजा है और वह हर एक जन को अपनी महिमा के लिए चाहता है। यही कारण है कि हम अविराम सुसमाचार सुनाते हैं। अफ्रीका में 3,000 जनजातियां हैं जो आत्माओं की पूजा करती हैं जबकि उनकी आराधना के योग्य एक ही राजा है। इसी प्रकार अनेक अन्य स्थानों के मनुष्य है जिन्हें प्रभु यीशु को जानने की आवश्यकता है। चीन, लाओस, कोरिया, क्यूबा आदि समाजवादी राष्ट्रों में 100 करोड़ से अधिक नास्तिकों को जानना है कि एक परमेश्वर है जिसका नाम प्रभु यीशु है। प्रभु यीशु क्रूस पर मरकर फिर जी उठा और फिर आएगा। एकमात्र वही स्तुति के योग्य है। जब कलीसिया को यह बोध हो जाएगा तब हम इस सुसमाचार के प्रचार के निमित्त अपना जीवन अर्पित कर देंगे। तब हम यह न कहेंगे कि हमें सुविधाएं चाहिएं। कलीसिया कहती है, "हम सुसमाचार प्रचार के लिए जीवन अर्पित करते हैं। हम चुप नहीं बैठेंगे।"

प्रभु यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा के आ जाने पर तुम गवाह होगे। यहां मुख्य शब्द है, "गवाह।" कुछ लोगों का कहना है कि हमारा जीवन गवाही देता है। सन्त फ्रांसिस ने कहा था, "हर समय सुसमाचार प्रचार करो और आवश्यक हो तो शब्दों का उपयोग करो।" जीवन से गवाही अच्छी है परन्तु गवाही का अर्थ है, मुंह से बोलना। आज मध्य एशिया में विश्वासी बन्दीगृह में हैं क्योंकि वे प्रचार करते हैं न कि मात्र भला जीवन जीते हैं। प्रभु यीशु ने यह नहीं कहा था कि पवित्र आत्मा के आने पर तुम दयालु हो जाओगे।

अतः हम यह न कहें, "मैं अपने जीवन से गवाही देता हूं।" हमें कुछ करना है परन्तु मुख्य बात तो यह है, "मैं पवित्र आत्मा की अगुवाई पाकर गवाही देता हूं।" यह अच्छी बात हैं आप एक असामान्य भावना की प्रतीक्षा नहीं करते हैं परन्तु पवित्र आत्मा आपमें एक उद्देश्य के निमित्त हैः गवाही के लिए। प्रेरितों के काम 1:8, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

प्रेरितों के काम 2:1–14, "जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे। एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे। आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त यहूदी यरूशलेम में रहते थे। जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और

लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं। वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं? तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है? हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मेसोपोटामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया, और फ्रूगिया और पंफूलिया और मिस्र और लीबिआ देश जो कुरेने के आस पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी, अर्थात् यहूदी और यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी–अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े–बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।" और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, "यह क्या हो रहा है?" परन्तु दूसरों ने ठट्ठा करके कहा, "वे तो नई मदिरा के नशे में चूर हैं।" तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, "हे यहूदियो और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो, और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।"

पवित्र आत्मा के प्रवेश करने पर उन्होंने विभिन्न भाषाएं बोलना आरंभ कर दिया। पतरस खड़ा होकर प्रचार करता है, "प्रभु यीशु की उपस्थिति के सामर्थ्य में सुसमाचार सुनाओ।" मुझे यह बात बहुत अच्छी लगती है। पहला सुसमाचार प्रचार कौन करता है? यह वही पतरस है जो सुसमाचार में अनर्थ बातें ही करता था। अतः प्रभु यीशु ने कहा था कि स्वर्ग से सामर्थ्य पाने तक इसी नगर में रुके रहना। यह ऐसा था कि प्रभु यीशु कह रहा था, "पतरस, संसार नहीं चाहता कि तू मेरे आत्मा के बिना प्रचार करे। अतः शान्ति रख जब तक मेरा आत्मा तुझ में न समा जाए तब जितना चाहे उतना बोलना।" अतः अब वह प्रचार करता है। यहां पतरस ही नहीं यह हम हैं।

वह हमारे साथ है। यह उस महान आदेश की प्रतिज्ञा है– मत्ती 28:20, "और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओः और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।"

वह हम में अन्तर्वास करता है। यही कारण है कि यूहन्ना में प्रभु यीशु ने कहा कि हम उससे भी बड़े काम करेंगे। यूहन्ना 14:12, "मैं तुम से सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।"

क्या हम वास्तव में प्रभु यीशु से बड़े काम करेंगे? जी हां। विचार करें: प्रभु यीशु पृथ्वी पर एक ही ऐसा मनुष्य था जो पवित्र आत्मा से अभिषेक पाया और भरा हुआ था। जब स्वर्ग में गया और वहां से पवित्र आत्मा भेजता है कि उसके हर एक अनुयायी का अभिषेक करे और उसमें भर जाए। अतः इस समय पवित्र

आत्मा संपूर्ण संसार में सुसमाचार प्रचार को सामर्थ्य प्रदान कर रहा है। और मनुष्य प्रभु यीशु को ग्रहण कर रहे हैं। मनुष्य पाप और संघर्ष से मुक्ति पा रहा हैं क्योंकि पवित्र आत्मा क्रियाशील है।

पवित्र आत्मा हम सब में अन्तर्वासी है। वह हमें आज्ञापालन के योग्य बनाता है। यहेजकेल 36:26–27, "मैं तुम को नया मन दूंगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूंगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूंगा। मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूंगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।"

यहेजकेल 37:1–14, "यहोवा की शक्ति मुझ पर हुई, और वह मुझ में अपना आत्मा समवाकर बाहर ले गया और मुझे तराई के बीच खड़ा कर दिया; वह तराई हड्डियों से भरी हुई थी। तब उसने मुझे उनके चारों ओर घुमाया, और तराई की तह पर बहुत ही हड्डियां थीं; और वे बहुत सूखी थीं। तब उसने मुझ से पूछा, "हे मनुष्य के सन्तान, क्या ये हड्डियां जी सकती हैं?" मैं ने कहा, "हे परमेश्वर यहोवा, तू ही जानता है।" तब उसने मुझ से कहा, "इन हड्डियों से भविष्यद्वाणी करके कह, 'हे सूखी हड्डियो, यहोवा का वचन सुनो। परमेश्वर यहोवा तुम हड्डियों से यों कहता हैः देखो, मैं आप तुम में सांस समाऊंगा, और तुम जी उठोगी। मैं तुम्हारी नसें उपजाकर मांस चढ़ाऊंगा, और तुम को चमड़े से ढांपूंगा; और तुम में सांस समाऊंगा और तुम जी जाओगी; और तुम जान लोगी कि मैं यहोवा हूं।'" इस आज्ञा के अनुसार मैं भविष्यद्वाणी करने लगा; और मैं भविष्यद्वाणी कर ही रहा था, कि एक आहट आई, और भुईंडोल हुआ, और वे हड्डियां इकट्ठी होकर हड्डी से हड्डी जुड़ गईं। मैं देखता रहा, कि उन में नसें उत्पन्न हुईं और मांस चढ़ा, और वे ऊपर चमड़े से ढंप गईं; परन्तु उनमें सांस कुछ न थी। तब उसने मुझ से कहा, "हे मनुष्य के सन्तान, सांस से भविष्यद्वाणी कर, और सांस से भविष्यद्वाणी करके कह, "हे सांस परमेश्वर यहोवा यों कहता हैः चारों दिशाओं से आकर इन घात किए हुओं में समा जा कि ये जी उठें।" उसकी इस आज्ञा के अनुसार मैं ने भविष्यद्वाणी की, तब सांस उन में आ गई, ओर वे जीकर अपने अपने पांवों के बल खड़े हो गए; और एक बहुत बड़ी सेना हो गई। फिर उसने मुझ से कहा, "हे मनुष्य के सन्तान, ये हड्डियां इस्राएल के सारे घराने की उपमा हैं। वे कहते हैं, हमारी हड्डियां सूख गईं, और हमारी आशा जाती रही; हम पूरी रीति से कट चूके हैं। इस कारण भविष्यद्वाणी करके उन से कह, परमेश्वर यहोवा यों कहता हैः हे मेरी प्रजा के लोगो, देखो, मैं तुम्हारी कबरें खोलकर तुम को उन से निकालूंगा, और इस्राएल के देश में पहुंचा दूंगा। इसलिये जब मैं तुम्हारी कबरें खोलूं, और तुम को उन से निकालूं, तब हे मेरी प्रजा के लोगो, तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूं। मैं तुम में अपना आत्मा समाऊंगा, और तुम जीओगे; और तुम को तुम्हारे निज देश में बसाऊंगा; तब तुम जान लोगे कि मुझ यहोवा ही ने यह कहा, और किया भी है, यहोवा की यही वाणी है।"

वह हमारे सुसमाचार प्रचार को सामर्थी बनाता है। कलीसिया केवल शब्दों का उपयोग ही नहीं करती है वह एक निश्चित सन्देश सुनाती है। न्यायी और अनुग्रहकारी परमेश्वर ने आशारहित पापी मनुष्य को विद्रोह की दशा में देखा और उसने अपने पुत्र को भेजा– मानवीय देह में– कि क्रूस पर उसका क्रोध उठा ले और पुनरुत्थान द्वारा पाप पर अपना सामर्थ्य प्रकट करे कि उसमें विश्वास करनेवाला प्रत्येक मनुष्य सदा के लिए परमेश्वर से मेल कर पाए।

अतः हम प्रचार करते समय मनुष्यों को बताते हैं कि परमेश्वर का गुण क्या है– परमेश्वर कौन है। हम मनुष्यों को पाप के विषय में बताते हैं। आप किसी को जल पिलाते हैं, आपकी प्रशंसा होती है परन्तु जब आप उनको यह कहते हैं कि मनुष्य पापी है और परमेश्वर के समक्ष दोषी है तो आपकी प्रशंसा नहीं होगी। अतः उन्हें पानी तो अवश्य पिलाएं परन्तु सत्य छिपा कर उन्हें धोखा न दें। तीसरा, मसीह की पर्याप्तता। हम उसके जीवन, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान और विश्वास की आवश्यकता की चर्चा करते हैं। हम उन्हें विश्वास के लिए पुकारते हैं और अन्त में अनन्त जीवन की अत्यावश्यकता का बोध करवाते हैं। हम उनसे कहते हैं कि वे मसीह यीशु की ओर फिरें और उसमें विश्वास करें।

अनन्त जीवन सुसमाचार के इन सूत्रों पर और सुसमाचार की गवाही पर हमारे जीवन के संदर्भ निर्भर करता है। 1 पतरस 3 में लिखा है कि हम अपनी आशा की चर्चा करने के लिए तत्पर रहें। कलीसिया इस सुसमाचार को सुनाती है तो परमेश्वर मनुष्यों के हृदयों को जागृत करता है। मुझे प्रेरितों के काम 13:48 अति मनभावन लगता है, "यह सुनकर अन्यजातीय आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे; और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।"

पतरस का प्रचार सुनकर श्रोताओं के हृदय छिद गए। वे अनन्त जीवन के लिए निश्चित थे। यह परमेश्वर का काम था।

मैं एक समय दक्षिण एशिया के सर्वाधिक सुसमाचार प्रदेश में था। वहां मुझे प्रचार करके ऐसी अनुभूति हुई कि मेरा प्रचार अच्छा नहीं था। मुझे ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि मेरी बात उनकी समझ में आई। परन्तु उस छोटी सी सभा में जिसमें अधिकांश विश्वासी थे तीन अविश्वासियों ने प्रभु को ग्रहण किया। अतः मुख्य बात यह नहीं कि हम कितने अच्छे हैं या हमारा प्रदर्शन कितना अच्छा है। मुख्य बात है, पवित्र आत्मा कठोर से कठोर हृदय को छेदता है। और उनका अनन्तकालीन परिवर्तन हो जाता है।

कलीसिया यीशु के उद्देश्यों के प्रकाश में सुसमाचार सुनाता है। यहां आता है हमारी अब तक की चर्चा का सारांश। हम आराधक हैं और हम गवाह हैं और गवाही का अर्थ है उद्घोषणा। हम में पवित्र आत्मा का अन्तर्वास इसलिए है कि हम प्रचार करें। हम प्रेरितों के काम 2 देखें। पुराने नियम में हम देखते हैं कि जब परमेश्वर का आत्मा भविष्यद्वक्ताओं या किसी मनुष्य पर आता था, तो वह बोलने लगता था। पुराने नियम की एक सामान्य अभिव्यक्ति थी, "यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा..."

गिनती 11:29, "मूसा ने उससे कहा, "क्या तू मेरे कारण जलता है? भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!"

गिनती 24:2–4, "और बिलाम ने आंखें उठाई, और इस्राएलियों को अपने गोत्र गोत्र के अनुसार बसे हुए देखा। और परमेश्वर का आत्मा उस पर उतरा। तब उसने अपनी गूढ़ बात आरम्भ की, और कहने लगा, "बोर के पुत्र बिलाम की यह वाणी है, जिस पुरुष की आंखें बन्द थीं उसी की यह वाणी है, ईश्वर के वचनों का सुननेवाला, जो दण्डवत् में पड़ा हुआ खुली हुई आंखों से सर्वशक्तिमान का दर्शन पाता है, उसी की यह वाणी है।"

2 शमूएल 23:2, "यहोवा का आत्मा मुझ में होकर बोला, और उसी का वचन मेरे मुंह में आया।"

यहेजकेल 11:5, "तब यहोवा का आत्मा मुझ पर उतरा, और मुझ से कहा, "ऐसा कह, यहोवा यों कहता है: हे इस्राएल के घराने, तुम ने ऐसा ही कहा है; जो कुछ तुम्हारे मन में आता है, उसे मैं जानता हूं।"

यह पवित्र आत्मा का काम है। पतरस के प्रचार का अधिकांश विषय योएल 2 से था। पतरस ने पहला प्रचार किया। वह पद 16 का संदर्भ देते हुए कहता है, "यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थी," और फिर पद 17 से वह योएल 2:28–32 से आरंभ करता है। "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे–बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा। "मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार, अर्थात् लहू और आग और धूएं के खम्भे दिखाऊंगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अन्धियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो

जाएगा। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे।"

अब हम पतरस के उपदेश का मूल्यांकन करके देखते हैं कि उसने जो संदर्भ दिया वह सही था।

प्रेरितों के काम 2:17, "'परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।"

क्या उसका संदर्भ सही था?

योएल 2:28, "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे–बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।"

हां लगभग सही था।

प्रेरितों के काम 2:17, "'परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।"

यह तो सही है।

प्रेरितों के काम 2:17, "'परमेश्वर कहता है, कि अन्त कि दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा, और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।"

तुलना करें योएल 2:28–32, "उन बातों के बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा; तुम्हारे बेटे–बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे पुरनिये स्वप्न देखेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे। तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा। "मैं आकाश में और पृथ्वी पर चमत्कार,

अर्थात् लहू और आग और धूएं के खम्भे दिखाऊंगा। यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अन्धियारा होगा और चन्द्रमा रक्त सा हो जाएगा। उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा; और यहोवा के वचन के अनुसार सिय्योन पर्वत पर, और यरूशलेम में जिन बचे हुओं को यहोवा बुलाएगा, वे उद्धार पाएंगे।"

यहां कुछ तालमेल है परन्तु हमें उसे सराहना चाहिए।

प्रेरितों के काम 2:18 में वह कहता है, "वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।"

योएल 2:29 में लिखा है, "तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उण्डेलूंगा।"

प्रेरितों के काम 2:18 के अन्त में पतरस कहता है, "वे भविष्यद्वाणी करेंगे।" यह योएल की पुस्तक में नहीं है। यहां पतरस ने कुछ जोड़ दिया है। "ऊपर आकाश में अद्भुत काम... लहू और आग..."

ऐसा प्रतीत होता है कि पतरस गड़बड़ा गया परन्तु यदि इसमें हमारे लिए कोई सन्देश तो? क्या योएल 2 और प्रेरितों के काम 2 में कुछ अन्तर है? पुराने नियम में कुछ ही भविष्यद्वक्ता थे– यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, योएल तथा अन्य जिन पर परमेश्वर के वचन के प्रचार का उत्तरदायित्व था। नये नियम में अनेक भविष्यद्वक्ता हैं। प्रभु यीशु में विश्वास करनेवाले सब जन भविष्यद्वक्ता हैं। हम, मसीह के अनुयायियों को पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के समान सौभाग्य प्राप्त है।

भविष्यद्वक्ता होने का अर्थ क्या है? भविष्यद्वक्ता परमेश्वर का वचन सुनाता था। इस संसार में हर एक विश्वासी पर परमेश्वर का आत्मा है। अतः आपका उत्तरदायित्व है कि आप परमेश्वर के बारे में सुनाएं– यीशु क्रूस पर मरा, फिर जी उठा, उसने पाप का दण्ड चुका दिया। उसकी ओर फिरें और उद्धार पाएं। आप परमेश्वर के पूर्ण अधिकार और आत्मा के साथ प्रचार कर सकते हैं और वचन के फल उत्पन्न होते देख सकते हैं। जी हां, यही उद्देश्य है।

हम लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम से आठ संदर्भ देखेंगे। "पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा" पर ध्यान दें।

लूका 1:13–15, "परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे जकरयाह, भयभीत न हो, क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है; और तेरी पत्नी इलीशिबा से तेरे लिये एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यूहन्ना रखना। तुझे आनन्द और हर्ष होगाः और बहुत लोग उसके जन्म के कारण आनन्दित होंगे, क्योंकि वह प्रभु के सामने महान् होगा; और दाखरस और मदिरा कभी न पीएगा; और अपनी माता के गर्भ ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।"

लूका 1:39–42, "उन दिनों में मरियम उठकर शीघ्र ही पहाड़ी देश में यहूदा के एक नगर को गई, और जकरयाह के घर में जाकर इलीशिबा को नमस्कार किया। ज्योंही इलीशिबा ने मरियम का नमस्कार सुना, त्योंही बच्चा उसके पेट में उछला, और इलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई। और उसने बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "तू स्त्रियों में धन्य है, और तेरे पेट का फल धन्य है!"

लूका 1:67–69, "उसका पिता जकरयाह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया, और भविष्यद्वाणी करने लगाः "प्रभु इस्राएल का परमेश्वर धन्य हो, क्योंकि उसने अपने लोगों पर दृष्टि की और उनका छुटकारा किया है, और अपने सेवक दाऊद के घराने में हमारे लिये एक उद्धार का सींग निकाला।"

प्रेरितों के काम 2:2–4, "एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।"

प्रेरितों के काम 4:8, "तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा।"

प्रेरितों के काम 4:31, "जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।"

प्रेरितों के काम 9:17–20, "तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, "हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।" और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके–से

गिरे और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन करके बल पाया। और वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे। और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा कि वह परमेश्वर का पुत्र है।"

प्रेरितों के काम 13:8–11, "परन्तु इलीमास टोन्हे ने, क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है उनका विरोध करके हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा। तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा, "हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धर्म के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा? अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर लगा है; और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।" तब तुरन्त धुंधलापन और अन्धेरा उस पर छा गया, और वह इधर उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़के ले चले।"

यहां आप हर एक संदर्भ में आत्मा से भरना देखते हैं जो परमेश्वर के वचन के प्रचार से संबन्धित है। आत्मा हम में है कि हमें शान्ति दे, हमें वरदान दें। वह हमें में अनेक काम करवाता है– हमें पाप का बोध करवाता है। स्मरण रखें! आत्मा आपमें है कि आप प्रभु यीशु की चर्चा करने का सामर्थ्य पाएं। हम में पवित्र आत्मा के अन्तर्वास का यही उद्देश्य है।

परमेश्वर हमें क्षमा करे कि हम पुराने नियम का प्रसंग गलत करते हैं। हम सोचते हैं कि हमारे पास पास्टर हैं और अन्य प्रचारक हैं इसलिए हम मनुष्य को आराधना में लाएं कि वे पास्टर से प्रवचन सुनें। सुसमाचार फैलाने की विधि है कि प्रत्येक विश्वासी अन्तर्वासी आत्मा के सामर्थ्य से संपूर्ण क्षेत्र में मसीह के सुसमाचार की चर्चा करे। परमेश्वर ने आपको एक उद्देश्य से वहां रखा है जहां आप काम करते हैं और रहते हैं और यह उद्देश्य है कि आप उसकी चर्चा करें। इसी प्रकार सुसमाचार संपूर्ण संसार में पहुंचेगा।

कलीसिया यीशु की योजना के अनुपालन में सुसमाचार प्रचार करती है– प्रेरितों के काम 1:8, "परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"

यह पद संपूर्ण पुस्तक की रूपरेखा है।

प्रेरितों के काम 6:7 सुसमाचार यरूशलेम से सामरिया में जाता है।

"परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत को माननेवाला हो गया।"

प्रेरितों के काम 8 में यहूदा, गलील और सामरिया में कलीसिया शान्ति में है और विकसित हो रही है। प्रेरितों के काम 8:1–5, "शाऊल उसके वध में सहमत था। उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव आरम्भ हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर–बितर हो गए। कुछ भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा और उसके लिये बड़ा विलाप किया। शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर–घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट–घसीटकर बन्दीगृह में डालता था। जो तितर–बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे; और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।"

प्रेरितों के काम 9 सुसमाचार रोम में पहुंचा। प्रेरितों के काम 9:31, "इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और समरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।"

प्रेरितों के काम 28 के अन्त में सुसमाचार पृथ्वी की छोर तक पहुंचता है। प्रेरितों के काम 28:28–31, "अतः तुम जानो कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे।" जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहां से चले गए। वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा, और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक–टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।"

पुराने नियम में परमेश्वर ने सब जातियों को आशिष दी। बेबीलोन के गुम्मट द्वारा विभिन्न भाषाएं उत्पन्न हुईं।

उत्पत्ति 11:1–9, "सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा और एक ही बोली थी। उस समय लोग पूर्व की और चलते चलते शिनार देश में एक मैदान पाकर उसमें बस गए। तब वे आपस में कहने लगे, "आओ, हम ईटें बना बना के भली भांति आग में पकाएं।" और उन्होंने पत्थर के स्थान में ईंट से, और चूने के स्थान पर मिट्टी के गारे से काम लिया। फिर उन्होंने कहा, "आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी

आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।" जब लोग नगर और गुम्मट बनाने लगे, तब इन्हें देखने के लिये यहोवा उतर आया। और यहोवा ने कहा, "मैं क्या देखता हूं कि सब एक ही दल के हैं, और भाषा भी उन सब की एक ही है, और उन्होंने ऐसा ही काम भी आरम्भ किया; और अब जो कुछ वे करने का यत्न करेंगे, उसमें से कुछ उनके लिये अनहोना न होगा। इसलिये आओ, हम उतर के उनकी भाषा में गड़बड़ी डालें, कि वे एक दूसरे की बोली को न समझ सकें।" इस प्रकार यहोवा ने उनको वहां से सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया; और उन्होंने उस नगर का बनाना छोड़ दिया। इस कारण उस नगर का नाम बेबीलोन पड़ा; क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, वह यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।"

उत्पत्ति 12 में परमेश्वर अब्राहम से कहता है कि वह सब भाषाओं के लिए आशिष होगा और प्रेरितों के काम 2 में यह बात पूरी हो रही है। उत्पत्ति 12:1–3, "यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपनी कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम महान् करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।"

नये नियम में परमेश्वर का सुसमाचार सब जातियों में सुनाया जा रहा है।

मत्ती 24:14, "और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा।"

मत्ती 28:19, "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।"

प्रकाशितवाक्य 7:9–10, "इसके बाद मैं ने दृष्टि की, और देखो, हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियां लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है, और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, "उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय–जय कार हो!"

कलीसिया बपतिस्मा देती है

सुसमाचार सुनकर मनुष्य विश्वास करता है और परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बुलाया जाता है तब क्या होता है? कलीसिया उसे बपतिस्मा देती है।

प्रेरितों के काम 2:41, "अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।"

प्रेरितों के काम 10:48, "और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।"

प्रेरितों के काम 19:5, "यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।"

आधार...

प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रत्येक विश्वासी के लिए बपतिस्मा लेना आवश्यक था कि मसीह की पहचान में आ जाए। यह आधार है। हम नई वाचा के लोग हैं और बपतिस्मा घोषणा है कि हम प्रभु यीशु के हैं। प्रेरितों के काम 19 और 10 में उनका मसीह के नाम में बपतिस्मा हुआ। भाषा का मूल अर्थ है, मसीह की पहचान में होना।

मुझे डॉ. जॉन स्टॉट की बात बहुत अच्छी लगती है। "मसीह का अनुयायी होना, मसीह के साथ व्यक्तिगत, गंभीर पहचान है और उसके साथ यह एकता हमारे बपतिस्मे द्वारा सजीव प्रकट होती है।" यदि किसी विश्वासी ने बपतिस्मा न लिया हो तो मैं कहता हूं कि आप नये नियम के विपरीत जी रहे हैं।

आरंभ में ऐसा ही था। आपका जीवन भिन्न था। "मन फिराओ और बपतिस्मा लो।" कलीसिया में आनेवालों ने बपतिस्मा लिया था। अतः आप कहें कि आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है तो आपका विचार गलत है। ऐसा कैसे हो सकता है कि आप मसीह में विश्वास रखें और उसकी पहचान में न होना चाहें, विशेष करके संसार में अपने भाई–बहन के कारण?

एक बार मैं एशिया में आवासीय कलीसिया में बपतिस्में की शिक्षा दे रहा था कि सभा के बाद दो विश्वासियों ने बपतिस्मा लेने की इच्छा व्यक्त की। मैं प्रसन्न हुआ कि मैं ने उन्हें बपतिस्मे की शिक्षा दी परन्तु अगले ही पल मैं ने असामान्य बात सीखी। कलीसिया में उनसे पूछा, "क्या आप जान का जोखिम उठा कर बपतिस्मा लेना चाहते हैं?" उनमें से एक किशोर था। उसने कहा, "कुछ भी हो, मैं बपतिस्मा लूंगा।" और दूसरा एक व्यस्क था। उसने कहा, "मैं तो पहले ही प्रभु यीशु के पीछे चलने के लिए सब कुछ बलिदान कर चुका हूं।" अतः बपतिस्मे को ओछा नहीं समझना चाहिए। यह एक अति महत्वपूर्ण बात है।

बपतिस्मा मसीह से पहचान बनाना है और बपतिस्मा स्पष्ट करता है कि हम मसीही कलीसिया में एक दूसरे के हैं। अब एक प्रश्न है, "मसीही अनुयायी बपतिस्मा क्यों लेता है?" पहला कारण, हम प्रभु यीशु के उदाहरण पर चलते हैं। मत्ती 3 में प्रभु यीशु ने बपतिस्मा लिया था।

मत्ती 3:13–17, "उस समय यीशु मसीह गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास उससे बपतिस्मा लेने आया। परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, "मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?" यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, "अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है।" तब उसने उसकी बात मान ली। और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा। और देखो, यह आकाशवाणी हुईः "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।"

बपतिस्मा मन फिराव का प्रतीक था और प्रभु यीशु जो निष्पाप था उसने बपतिस्मा लेकर हमारे साथ एकता प्रकट की।

हम प्रभु यीशु की आज्ञा मानते हैं। प्रेरितों के काम की पुस्तक में मन फिराकर बपतिस्मा लेने का निर्देश दिया गया है। मत्ती रचित सुसमाचार के अन्त में प्रभु यीशु ने आज्ञा दी है– सब जातियों में चेले बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। अब यदि आप ही ने बपतिस्मा न लिया हो तो आप दूसरों से बपतिस्मा लेने को कैसे कहेंगे? आप प्रभु यीशु के उस महान आदेश का पालन कैसे करेंगे यदि आप ने स्वयं ही बपतिस्मा नहीं लिया? यह तो विरोध है। यह आज्ञापालन का विषय है।

तीसरा कारण, बपतिस्मे के द्वारा हम मसीही की देह के साथ एक होते हैं। इफिसियों 4:4, "एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है।"

कुछ विद्वानों का मत है कि बपतिस्मा बाहरी दिखावा नहीं है। हो सकता है, कि उनका विचार सही हो परन्तु सुसमाचारों में, प्रेरितों के काम की पुस्तक में और पत्रियों में प्रभु यीशु का प्रत्येक विश्वासी बपतिस्मा लेता था।

1 कुरिन्थियों 12:12–13, "क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।"

यहां तो बपतिस्मा न लेने का प्रश्न ही नहीं उठता है। नये नियम में विश्वासी बपतिस्मा पाए बिना रहे असंभव था।

यीशु का उदाहरण, उसकी आज्ञा और मसीह की देह के साथ एक होने के लिए हम बपतिस्मा लेते हैं। कलीसिया कहती है, "बपतिस्मा लेनेवाला यह व्यक्ति प्रभु यीशु में विश्वास करता है और हम उसके साथ पर्व मनाने का वचन देते हैं।" बपतिस्मा पानेवाला प्रकट करता है, "हां, मैं ने प्रभु यीशु में विश्वास किया है। मैं भी बुलाया गया हूं।"

बपतिस्मा का अर्थ क्या है? पहला और महत्वपूर्ण अर्थ है, मसीह के अनुग्रह की स्मृति है।

रोमियों 6:5–10, "क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा। इसलिये यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएंगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिये एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिये जीवित है।"

यहां पौलुस कहता है कि प्रभु यीशु क्रूस पर हमारे स्थान में मरा और हमारा उद्धार होकर फिर से जी उठा। बपतिस्मा में हमारी पहचान उससे होती है। यह मसीह यीशु के सुसमाचार का उदाहरण है। बपतिस्मा से आपका उद्धार नहीं है परन्तु बपतिस्मा आपके उद्धार का प्रतीक है। मसीह में विश्वास द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से बुलाए गए तो हम परमेश्वर की सन्तान हैं और हम उसकी सन्तान बपतिस्मा लेते हैं। पानी के नीचे जाना उसकी मृत्यु की समानता है। पानी से बाहर निकलना उसके पुनरुत्थान में सहभागिता है। जब आप बपतिस्मा लेते हैं तब आप पानी के नीचे ही नहीं रहेंगे क्योंकि प्रभु यीशु कब्र ही में नहीं रह गया था। वह कब्र से निकल आया था और आप भी पानी से निकल आते हैं। बपतिस्मा यही प्रकट करता है। यह सुसमाचार है।

यह एक स्मृति है और मसीह यीशु की महिमा की घोषणा है। प्रभु यीशु द्वारा हमारे पापों को उठा लेने का एक अति उत्तम चित्रण कुलुस्सियों 2:11–15 में है, "उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है, और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया, और विधियों का वह लेख जो हमारे नाम पर और हमारे विरोध में था मिटा डाला, और उसे क्रूस पर कीलों से जड़कर सामने से हटा दिया है। और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय–जयकार की ध्वनि सुनाई।"

उसने पाप का खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा पाप पर विजय पाई। यह कलीसिया और कलीसिया से बाहर उद्घोषणा है। बपतिस्मा का अर्थ यही है।

मसीह के अनुयायी बपतिस्मा कैसे लेते हैं। इसका उत्तर अलग अलग कलीसियाओं में अलग अलग है और आपके उत्तर भी अलग अलग होंगे। मेरे जीवन में भी आनेवाले विश्वास के महान नायक मुझसे सहमत न होंगे। मैं आपके सामने विनम्रतापूर्वक वही कहना चाहता हूं जो धर्मशास्त्र कहता है परन्तु फिर भी इसमें मतभेद की गुंजाइश है। यह निश्चय ही मसीह होने का या विश्वास का प्रश्न नहीं है।

मुझे पूरा विश्वास है कि बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेना पूरा पानी के नीचे जाना है। बपतिस्मे का मूल यूनानी शब्द का अर्थ है जलमग्न होना। यही कारण है कि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहलाता था। वह जलमग्न का बपतिस्मा देता था। मत्ती 3 और मरकुस 1 में यही लिखा है कि बपतिस्मा लेकर जब प्रभु यीशु पानी से बाहर निकला... यूहन्ना ने किसी पात्र में पानी लेकर प्रभु यीशु के ऊपर नहीं डाला था।

प्रेरितों के काम की पुस्तक अध्याय 8 में आरंभिक कलीसिया के अगुओं की रीति हम देखते हैं। उदाहरण कूशी खोजा– प्रेरितों के काम 8:36–38, "मार्ग में चलते–चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे। तब खोजे ने कहा, "देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।" फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।" उसने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया।"

यह सुसमाचार का चित्रण है। हम प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान में अपनी पहचान बनाते हैं।

रोमियों 6:4, "अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"

इस प्रकार हम देखते हैं कि जलमग्न ही बाइबल आधारित बपतिस्मा है।

बपतिस्मा कौन ले सकता है? जिसका नया जन्म हुआ है। जिनका मन परिवर्तन हुआ है। जो घोषणा करता है कि वह मसीह यीशु का है। शिशु अवस्था में तो ऐसा अंगीकार करना संभव नहीं।

कुलुस्सियों 2:11–12, "उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है, और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।"

शिशु के बपतिस्मे का तर्क पुराने नियम में खतना करने से जोड़ा जाता है। निःसन्देह पुराने नियम में खतना समुदाय की एकता का प्रतीक था परन्तु पौलुस कहता है कि बपतिस्मा आत्मिक जन्म है जो आत्मिक समुदाय का सदस्य बनता है। बपतिस्मा परमेश्वर के अनुग्रह के दिव्य कार्य से होता है जो हमारे मन में

किया जाता है। जलमग्न होने से पूर्व आत्मिक नवीकरण होता है। बाहरी प्रदर्शन भीतरी परिवर्तन का परिणाम है।

ऐसा मन परिवर्तन शिशु में नहीं हो सकता है। माता–पिता कहते हैं कि उनके बच्चे को मसीह के ज्ञान में बढ़ना है। यह एक अच्छी बात है। परन्तु बपतिस्मा के अर्थ को असमंजस में न डालें जब मसीह में विश्वास लाकर कोई बपतिस्मा न ले।

मसीह के अनुयायी को बपतिस्मा कब लेना चाहिए। ज्यों ही आप उद्धार के लिए मसीह में विश्वास करें। उदाहरणार्थः

प्रेरितों के काम 8:12–13, "परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे। तब शमौन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा। वह चिन्ह और बड़े–बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था।"

प्रेरितों के काम 8:36–38, "मार्ग में चलते–चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे। तब खोजे ने कहा, "देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।" फिलिप्पुस ने कहा, "यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।" उसने उत्तर दिया, "मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।" तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने खोजा को बपतिस्मा दिया।"

प्रेरितों के काम 9:18, "और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके–से गिरे और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम 10:47–48, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?" और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।"

प्रेरितों के काम 16:15, "जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने हम से विनती की, "यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो," और वह हमें मनाकर ले गई।"

प्रेरितों के काम 16:33, "रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम 18:8, "तब आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थवासी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया।"

प्रेरितों के काम 22:16, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।'"

विश्वासियों का बपतिस्मा तुरन्त किया जाता था और एक ही बार किया जाता था और मैं एक और बात बताना चाहता हूं हम ज्यों ही अपने उद्धार की गवाही दें हमें बपतिस्मा ले लेना चाहिए चाहे धर्मशास्त्र इसकी स्पष्ट चर्चा न करता हो। मैं इस बात पर इसलिए बल देता हूं कि नये नियम के सब संदर्भों में बपतिस्मा पानेवाले व्यस्क ही थे जिनमें आयु का उल्लेख नहीं किया गया है परन्तु हम विश्वासियों में जहां बच्चों का बपतिस्मा किया जाता है वहां हमें उन्हें झूठा आश्वासन नहीं देना है और न ही बाइबल से हटकर उद्धार संबन्धित शब्दावलियां बच्चों को सिखाना चाहिए। अतः हम माता–पिता और पास्टरगण के लिए उत्तम है कि हम बुद्धि से काम लें क्योंकि बच्चों के लिए सुसमाचार को पूर्णरूपेण समझना आसान नहीं है और मेरे विचार में धर्मशास्त्र इस सावधानी की ओर संकेत करता है।

बपतिस्मे के संदर्भ में आप विवाह के अनुष्ठान को ध्यान में रखें। विवाह में अपनी पत्नी को देख कर आपके मन में विचार उत्पन्न होता है कि वह आपकी है और उपस्थित गण भी कहते हैं, हां, वह आपकी है। आप भी उपस्थित गण से कहते हैं, "अब यह स्त्री मेरी है।" ऐसा ही बपतिस्मा है। वह भी एक सार्वजनिक प्रदर्शन है, व्यक्तिगत नहीं।

कलीसिया बपतिस्मा देती है क्योंकि वह कहती है, "हां, यह मसीह का है, मसीह की है।" आप कहते हैं, "जी हां, मैं मसीह का हूं। वह मेरा है। मैं उसकी मृत्यु में एक होता हूं– मैं पापों के लिए मर गया हूं। मैं उसके पुनरुत्थित जीवन में उसके साथ एक होता हूं। मैं अब उसमें जीवित हूं।" और कलीसिया एक साथ

आनन्द मनाती है। हम बपतिस्मे को कलीसिया में प्राथमिकता क्यों न दें? हमें यह करना आवश्यक है। यही कारण है कि यह विनिमय का विषय नहीं है। यह कलीसिया की आवश्यक गतिविधि है।

कलीसिया शिक्षा देती है

कलीसिया सुसमाचार प्रचार करती है। कलीसिया बपतिस्मा देती है और अब हम देखेंगे कि कलीसिया शिक्षा देती है। प्रेरितों के काम 2:42 में लिखा है कि वे प्रेरितों की शिक्षा के प्रति समर्पित थे। मुझे ओसगिनीस की बात बहुत अच्छी लगती है, "यदि प्रभु यीशु कलीसिया का सिर है और इस कारण कलीसिया के संपूर्ण जीवन का स्रोत और लक्ष्य है तथापि विकास की संभावना उसके आज्ञापालन द्वारा ही है। इसके विपरीत यदि कलीसिया मसीह यीशु और उसके वचन से विलग हो तो वह सक्रिय और सफल नहीं हो सकती।"

आज परमेश्वर के वचन की शिक्षा का महत्व कम करने की मानसिकता है। हम कहते हैं कि वह इतना महत्वपूर्ण नहीं है।

मेरे सेमिनरी प्रशिक्षण के समय एक सेमिनार का आयोजन किया गया था जिसमें अगुआ कह रहा था कि कलीसिया की शिक्षा और प्रचार पुराने हो गए हैं तथा अब उनकी आवश्यकता एवं महत्व नहीं रहा है। अब संगीत का स्थान है। मैं पूछना चाहता था कि वह अपने भाषण को गाकर क्यों नहीं सुना रहा है। मेरे विचार में हम इतिहास के इस शिखर पर अभी नहीं पहुंचे हैं जिसकी वह चर्चा कर रहा था। कलीसिया तो 2000 वर्षों से एक ही बात के प्रति समर्पित है।

कलीसिया परमेश्वर के वचन से बना एक समुदाय है।

संपूर्ण धर्मशास्त्र और इतिहास में हम उच्चारित वचन का सामर्थ्य देखते हैं। यद्यपि **प्रौद्योगिकी** ने हर एक क्षेत्र में प्रभाव डाला हुआ है, कलीसिया शिक्षा देती रहती है क्योंकि कलीसिया परमेश्वर के वचन से निर्मित समुदाय है। हम प्रभु यीशु द्वारा वचन से उद्धार पाते हैं।

रोमियों 10:17, "अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।"

विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है। हमारा उद्धार ऐसे ही होता है। हम अपने उद्धार का मार्ग स्वयं तैयार नहीं कर सकते हैं। धर्मशास्त्र कहता है कि हमारा उद्धारा इसी प्रकार होता है।

हमारा उद्धार होता है और हम वचन द्वारा किए जाते हैं।

2 तीमुथियुस 3:16–17, "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।"

हमें बाइबल दी गई है। उसकी शिक्षा द्वारा हम मसीह के स्वरूप में होते जाते हैं।

हमारा सुधार किया जाता है और हम धार्मिकता सीखते हैं और हम परमेश्वर के वचन के सेवक हैं। पौलुस कहता है कि हम वचन का प्रचार करत हैं। यह कलीसिया का मुख्य कार्य है। यह कलीसिया के लिए आज्ञा है– वचन की शिक्षा देना और वचन का प्रचार करना।

2 तीमुथियुस 4:1–5, "परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके, जो जीवतों और मरे हुओं का न्याय करेगा, और उसके प्रगट होने और राज्य को सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूं कि तू वचन को प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डांट और समझा। क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे, और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएंगे। पर तू सब बातों में सावधान रह, दुःख उठा, सुसमाचार प्रचार का काम कर, और अपनी सेवा को पूरा कर।"

कलीसिया परमेश्वर के वचन पर केन्द्रित एक समुदाय है। अतः कलीसिया परमेश्वर के वचन द्वारा निर्मित एक समुदाय है और कलीसिया परमेश्वर के वचन पर केन्द्रित समुदाय है। बाइबल कलीसिया में क्यों इतनी महत्वपूर्ण है? कलीसिया परमेश्वर के वचन की लम्बाई–चौड़ाई, ऊंचाई–गहराई को सम्मान देती है। कलीसिया परमेश्वर के प्रकाशन के महत्व को जानती है।

परमेश्वर अपने आप को वचन रूप में प्रकट करता है।

यूहन्ना 1:1, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।"

आदि में गीत नहीं था, नाटक नहीं था, संगीत नहीं था। आदि में वचन था। प्रभु यीशु संसार में परमेश्वर का संपर्क माध्यम है। वह परमेश्वर का वचन है। शमूएल के युग में प्रभु के दर्शन की कमी थी। अतः परमेश्वर ने एक भविष्यद्वक्ता को उभारा।

1 शमूएल 3:21, "और यहोवा ने शीलो में फिर दर्शन दिया, क्योंकि यहोवा ने अपने आप को शीलो में शमूएल पर अपने वचन के द्वारा प्रगट किया।"

परमेश्वर ने शीलो में शमूएल पर स्वयं को वचन के द्वारा प्रकट किया था।

परमेश्वर वचन रूप में प्रकट होता है और वचन के द्वारा प्रकट होता है। संपूर्ण धर्मशास्त्र में परमेश्वर के वचन के द्वारा हम उसकी महानता को प्रकट होता देखते हैं।

उसके वचन से सृष्टि की रचना हुई। इब्रानियों 11:3, "विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो।"

उसके वचन से आंधी थम गई थी। मरकुस 4:39, "तब उसने उठकर आंधी को डांटा, और पानी से कहा, "शान्त रह, थम जा!" और आंधी थम गई और बड़ा चैन हो गया।"

लहरें उसकी आज्ञा मानती हैं। बुखार जाता रहता है। लूका 4:39, "उसने उसके निकट खड़े होकर ज्वर को डांटा और ज्वर उतर गया, और वह तुरन्त उठकर उनकी सेवा–टहल करने लगी।"

उसके वचन से दुष्टात्माएं निकाली जाती हैं। मरकुस 1:25, "यीशु ने उसे डांट कर कहा, "चुप रह; और उसमें से निकल जा।"

पाप क्षमा होते हैं– मरकुस 2:5, "यीशु ने उनका विश्वास देखकर उस लकवे के रोगी से कहा, "हे पुत्र, तेरे पाप क्षमा हुए।"

अंधे देखते हैं। लूका 18:42, "यीशु ने उससे कहा, "देखने लग; तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।"

मृतक जी उठते हैं। यूहन्ना 11:43–44, "यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, "हे लाज़र, निकल आ!" जो मर गया था वह कफन से हाथ पांव बंधे हुए निकल आया, और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ था। यीशु ने उनसे कहा, "उसे खोल दो और जाने दो।"

संपूर्ण जगत परमेश्वर के वचन पर प्रतिक्रिया दिखाता है।

यशायाह 40:25–26, "इसलिये तुम मुझे किसके समान बताओगे कि मैं उसके तुल्य ठहरूं? उस पवित्र का यही वचन है। अपनी आंखें ऊपर उठाकर देखो, किसने इनको सिरजा? वह इन गणों को गिन गिनकर निकालता, उन सब को नाम ले लेकर बुलाता है? वह ऐसा सामर्थी और अत्यन्त बली है कि उनमें से कोई बिना आए नहीं रहता।"

रात में सितारे जगमगाते हैं। हमारी आकाश गंगा में 100 अरब सितारे हैं। आकाश में अनेक आकाश गंगाएं हैं जिनमें अरबों अरब सितारे हैं। केवल परमेश्वर ही है जो उन्हें नाम लेकर पुकारता है। उसके आदेश पर वे चमकते हैं।